लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2, संख्या:3; जुलाई-दिसंबर, 2021

घास : सात कविताएँ

✍ राकेश रोहित

1

बहुत नमी के बाद
हो जाती है बारिश

बहुत प्रतीक्षा के बाद
खिल जाते हैं फूल

बहुत बुलाने पर भी
जब नहीं आती है हँसी

उदास पृथ्वी घास के स्वप्न में जागती है

घास अन्याय के विरुद्ध
पृथ्वी का प्रतिरोध है।

2

झर जाता हूँ
जर जाता हूँ

राख हो जाता हूँ
तुम-सा

पर जब तक नमी से मिल नहीं लेता
और तुम्हारे फूल-सा खिल नहीं लेता

बारिशों में बिछी हरी चादर की तरह
कैसे अनंत हो सकता हूँ?

3

सौ बार जन्म लेता हूँ
प्रतीक्षा में

सौ बार
तुम्हारी राह ताकता हूँ

सौ बार
तुमसे मिलने आता हूँ

सौ बार तुम्हारे कंधे पर
हाथ रखता हूँ

सौ बार
तुम्हारी गोद में सो जाता हूँ

सौ बार सुनता हूँ
चुप रहकर तुम्हारे मन की धुन

बस एक बार खिलना है तुम-सा
और अमर बीज हो जाना है।

4

एक दिन सुना था सब बोलेंगे
एक दिन सुना है सब बोलेंगे

जब सुबह होती है सब बोलते हैं
जब शाम होती है सब बोलते हैं

सुनना सिर्फ तुम्हें सिखाया है
पृथ्वी ने

तुम साथ हो तो
विनम्र हो जाते हैं पहाड़
सुनते हैं उदास मनुष्य का मन।

5

फूलों से मिलने की प्रतीक्षा थी
प्रतीक्षा थी कि फल आयेंगे

प्रतीक्षा में बादुर सारी रात जगे
कि सबसे प्यारे रंग में
सबसे मीठा स्वाद आयेगा

प्रतीक्षा में पक्षियों ने कई मौसम
चुप गुजार दिये

हवा ने जबकि टहनियों के कंधे पर हाथ रखा था
बिना प्रतीक्षा के पत्ता भी नहीं हिलता था
मैं सिर्फ तुमसे मिल सकता था बिना इंतजार के
जैसे मैं माँ से मिलता रहा
जब तक माँ थी।

6

मैं नदी में लहर की तरह होना चाहता था
मैं प्यार में हिचक की तरह होना चाहता था

मैं स्वप्न में
ध्वनि की तरह होना चाहता था

मैं होना चाहता था
चुम्बन में ठहरी साँस की तरह

मैं पहाड़ पर होना चाहता था
घास की तरह।

7

तुम हो तो
मैं हूँ

तुम हो तो
स्वप्न है

तुम हो तो
तुम्हें पुकारता हूँ

तुम हो तो
प्रतीक्षा में है प्रेम

तुम हो तो
तुम्हारी बाहों में सो सकता हूँ।